ISSN: 2249-7862 (Print) : 2455-877X (Online)
www.aureoleonline.in

नए सिरे से सोचने का आह्वान करनेवाला उपन्यास: जिंदगी 50-50

Thara Benny[1] and Dr. Merly K. Punnoose[2]

[1]Research Scholar, Department of Hindi, Nirmala College, Muvattupuzha
Email: tharabenny92@gmail.com

[2]Associate Professor, Department of Hindi, St. Stephen's College, Uzhavoor

बीज शब्द: ट्रांसजेन्डर, अस्मिता, अस्तित्व, पहचान, नेक, रस्म, गुरु, चेला, आशीर्वाद

हरेक बात के दो पहलू होते हैं। हमेशा से ही हमारा समाज सकारात्मक पक्ष को ही स्वीकारता आया है। दूसरे पहलू की ओर ध्यान नहीं देता या उसकी उपेक्षा करता आया है। मलयालम में एक लोकोक्ति है 'छोड़ देने वाला पत्थर ही हीरा बनेगा' इस लोकोक्ति को सार्थक करने वाला उपन्यास है भगवंत अनमोल द्वारा रचित जिंदगी 50-50। भगवंत अनमोल द्वारा रचित यह उपन्यास हमारे जीवन के दु:ख-दर्द, खुशी का एहसास कराने के साथ- साथ हमारी जिंदगी की खामियों को सुधारकर, जिंदगी की दिशा को नई मोड देने की ओर प्रकाश डालता है। "इसमें यह संदेश भी संप्रेषित है कि लैंगिक दोष या बर्थ मार्क शारीरिक विकलांगता नहीं है तथा हार्मोनल डिसआर्डर या क्रोमोजोन डिसीज भी अछूत रोग नहीं है।"[1] रचनाकार की जिंदगी में घटित, घटनाओं का सिलसिलेवार चित्रण इस उपन्यास में हुआ है।

एक युवा इंजीनियर अनमोल की जिंदगी और उससे जुड़े पात्रों के द्वारा यह उपन्यास आगे बढ़ता है। कानपुर में जन्मा अनमोल ग्रामीण परिवेश से मुंबई शहर में आ बसता है और एक ऐटी कंपनी में काम करता है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई है। उपन्यास के प्रारंभ में लेखक अपनी कंपनी में काम करता हुआ दिखाई देता है तब उसकी माँ फोन करती है और बताती है कि उसकी पत्नी प्रसव पीड़ा से कराह रही है। वह जल्द से जल्द अस्पताल पहुँचता है तब वहाँ उसकी मुलाकात अपनी प्रेमिका अनाया से होती है और वह अपनी पुरानी यादों में खो जाता है। अनाया एक खूबसूरत लड़की है, लेकिन उसके गाल पर एक बड़ा दाग होने के कारण लोग उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं। केवल अनमोल ही उससे सामान्य व्यवहार करता है और धीरे-धीरे उन दोनों के बीच प्यार हो जाता है। अनाया तमिल लड़की है और अनमोल कानपुरी लड़का है। दोनों की संस्कृति और रीति-रिवाज अलग होने के कारण अनमोल इस रिश्ते के बारे में अपने घर में नहीं बताता है। जब भी अनाया अनमोल से शादी की बात करती है तब अनमोल चुप्पी साधे रहता है। इस वजह से अनाया एक दिन कंपनी छोड़कर मुंबई चली जाती है। अनमोल और उसकी पत्नी को एक बच्चा होता है। वह बच्चा एक ट्रांसजेन्डर है। अपने बच्चे के जन्म पर अनमोल अपने भाई हर्षा को याद करता है क्योंकि वह भी एक ट्रांसजेन्डर था। अनमोल अपने ट्रांसजेन्डर बच्चे को अपनाते हुए समाज में आत्मसम्मान के साथ जीने का निर्णय लेता है। यह फैसला उसके द्वारा इसलिए लिया जाता है क्योंकि उसके भाई हर्षा को अपनी जिंदगी में दर-दर की ठोकरें खानी पड़ी थी। वह ठान लेता है कि उसके भाई को अपने जीवन में जो उपेक्षायें सहनी पड़ी थी वैसी उपेक्षायें उसके बेटे सूर्या को उसके जीवन में नहीं सहनी पड़ेंगी।

अनमोल और उसकी पत्नी अशिका बच्चे के जन्म की खुशी पर एक पार्टी का इंतजाम करते हैं। इस प्रकार एक नयी रीति का शुरुआत करते हैं। लेकिन अनमोल के पिता ने हर्षा के जन्म पर ऐसा नहीं किया था क्योंकि उनके अनुसार उनका बेटा हर्षा ट्रांसजेन्डर होने के नाते उनके परिवार के लिए कलंक है। लेकिन अपने पिता से भिन्न होकर नई पीढ़ी का अनमोल अपने ट्रांसजेन्डर बेटे सूर्या को सहर्ष स्वीकारता है। जहाँ समाज ऐसे बच्चों की उपेक्षा करता आया है वहीं अनमोल ऐसे बच्चे को अपनाकर एक नई मिसाल कायम करता है। समाज के नज़रिए में एक ट्रांसजेन्डर की हैसियत मात्र ताली बजाने, भीख माँगकर अपना गुज़ारा करने तक ही सीमित है। पार्टी के दौरान खट्टर साहब का यह कथन समाज की मानसिकता को ही उजागर करता है- "अभी अनमोल भाई पार्टी दे रहे हैं कुछ सालों बाद उनका बेटा हिजड़ों की टोली में शामिल होकर हाय

हाय करता भीख माँगता नजर आएगा!"[2] समाज की इस संकुचित मानसिकता की धज्जियाँ उड़ाते हुए उसके प्रतिरोध में उपन्यासकार द्वारा कहे गए हैं ये शब्द सार्थक हैं कि - "सच कहूँ तो मुझे नहीं एक पिता को ही बोलना पड़ा। आज के बाद आप सभी से अनुरोध है कि मेरे बेटे का एक अंग ढंग से काम नहीं करता, इसका यह मतलब नहीं वह जीने का हकदार नहीं है"।[3] यह नई पीढ़ी के नज़रिए में आए बदलाव को ही दर्शाता है। अनमोल अपनी जिंदगी के द्वारा हर माता-पिता को यह सीख देना चाहता है कि ट्रांसजेन्डर बच्चों को अपनाकर उनके भविष्य को संवारना चाहिए। दुनिया में उन्हें भी जीने का हक है। इन्हें दर -दर की ठोकरें खाने को विवश करना उनके प्रति नाइंसाफी होगी। अनमोल ने देखा था कि उसके पिता उसके ट्रांसजेन्डर भाई हर्षा से बुरा सलूक करते थे। उसे चूहा मारने की दवा पिलाकर मारना चाहते थे।

हर कदम पर अनमोल सूर्या का साथ देता है। उन दोनों के बीच दोस्त जैसा रिश्ता है। सूर्या अपने जीवन में घटित हरेक घटना का जिक्र अनमोल से करता है। अनमोल सूर्या के सारे व्यवहार को 'सामान्य' मानता है, क्योंकि सूर्या के शरीर के हॉर्मोन के असंतलुन से वह वाकिफ है। लड़की जैसा कपड़ा पहनकर शीशे के सामने निहारते सूर्या को जब अनमोल देखता है तब उसके लिए उसे नहीं डाँटता। वह अपनी पत्नी आशिका को समझाते हुए कहता है कि - "आखिर हम उसे नहीं समझेंगे तो वह किसके सहारे इस दुनिया का सामना करेगा"।[4] लेकिन अनमोल के पिता उसके भाई हर्षा के साथ क्रूर व्यवहार करते थे। एक दिन अनमोल की इच्छा पर हर्षा द्वारा लड़की जैसा कपड़े पहनने पर उसके पिता उसे देख लेते हैं और उसे पीटते हुए कहते है- "छोड़ आएंगे हिजड़ो के पास, तो यहाँ वहाँ छुछुआत भीख माँगत फिरेगा!"।[5] अपने पिता के बुरे सलूक की वजह से वह अपने साथ हुए यौन शोषण का खुलासा घर में नहीं करता। दर्द के घूँट पीकर चुप्पी साधे रहता है। बेटे के साथ घटित अमानवीय घटना का पता लगने पर भी हर्षा के पिता उसे ही पीटते हैं। हर्षा की पीड़ा का चित्रण उपन्यासकार यों करते हैं -- "क्या समाज में मुझ जैसे लोगों को जीने का कोई हक नहीं? वही समाज जिसका एक व्यक्ति मेरे साथ कुकृत्य करता है और उसका दोष भी मुझे दिया जाता है! वही समाज जो अपने से अलग लोगों की इज्जत करना नहीं जानता क्या यह सभ्य समाज है?"[6] अपने पिता के क्रूर व्यवहार से हर्षा अपना घर छोड़कर कस्तूरी ट्रांसजेन्डर के पास चला जाता है। वहाँ हर्षा से हर्षिता बनता है और वहाँ भीख माँगकर अपनी जिंदगी गुज़ारता है। एक दिन अपने पिता के सामने भीख माँगते हुए देखे जाने पर वह मुंबई में जा बसता है, ताकि उसके पिता को उसकी वजह से ज़लील न होना पड़े। वह अनमोल से घर की खबर लेता रहता है और पता लगने पर कि पिता द्वारा मुकदमे में ज़मीन हार गए हैं वह अपना जिस्म बेचकर पैसा कमाता है और वे पैसे पिता को ज़मीन की खरीदारी के लिए भेज देता है। जीवन के अंतिम सांस तक वह अपने बेटे होने का फर्ज निभाता है। पिता की मदद करने की इच्छा से देह का व्यापार करने लगता है और एड्स का शिकार होकर आत्महत्या कर अपनी जीवन लीला को समाप्त कर लेता है। मरने से पहले हर्षिता द्वारा अपने पिता को लिखी चिठ्ठी की पंक्तियाँ यों हैं -"ज़िन्दगी में हर किसी में कमी होती है। जिन्दगी 50-50 होती है। जैसे दिन और रात... अँधेरा और प्रकाश... आपने हमेशा मेरे शारीरिक पक्ष को ही देखा... मेरी कमजोरी ही आपको दिखी... समाज की परवाह करते-करते आप यह भी भूल गये कि मैं भी एक इन्सान हूँ... आपके स्नेह-प्यार की भूखी हूँ... मेरी जिन्दगी के इस हिस्से को आपने अनदेखा ही कर दिया... नतीजा यह हुआ कि मैं इस भयंकर दलदल में आज फँस गयी हूँ। इसीलिए मैं छोड़कर जा रही हूँ, आपको आपके समाज के साथ!"[7]अपनी जिंदगी में उसके द्वारा झेले गए दर्द का खुलासा यहाँ उपन्यासकार ने किया है।

एक दिन सूर्या अपने जैसे ट्रांसजेन्डरों से मिलने के लिए जंगशन में जाता है और उनसे घुल-मिलकर बातें करता है तब अनमोल की नज़र उन पर पड़ती है जो कि शाम को अपने दफ्तर से लौट रहा होता है। सब कुछ देखकर भी वह वहाँ से चुप-चाप चला जाता है। वह चाहता है कि उसके बेटे सूर्या को अपनी जिंदगी में पूरी आज़ादी मिले -"अपने जैसे लोग किसे पसंद नहीं होते? एक लेखक दूसरे लेखक से मिलना चाहता है। एक ऐक्टर दूसरे ऐक्टर से मिलना चाहता है। विदेश में रह रहे भारतीय दूसरे भारतीयों से मिलना चाहते हैं। वह चाहे सूर्या हो या हर्षा हर कोई अपने जैसे लोगों से मिलना चाहते हैं"।[8] यह नई पीढ़ी की बदली हुई सोच का प्रमाण है। नई पीढ़ी द्वारा शिक्षा एवं खुली सोच के कारण ट्रांसजेन्डर

लोगों को सामान्य व्यक्ति के रूप में समझना आज सामान्य बात हो गई है। अनमोल ऐसी नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है। अनमोल सूर्या को क्रिमिनोलॉजी' कोर्स पढ़ाता है। वह कभी भी अपने सपनों का बोझ सूर्या पर नहीं थोपता। सूर्या के निजी जीवन में वह कभी भी नहीं झाँकता। उसे पूरी आज़ादी देकर उसकी इच्छा के अनुसार जीने के लिए छोड़ देता है। सूर्या की इच्छा के अनुसार एक 'प्राइवेट डिटेक्टिव एजेंसी' खोलने के लिए उसका साथ देता है। जब प्राइवेट डिटेक्टिव एजेंसी खोलने के साक्षात्कार के लिए सूर्या कमिशनर के पास जाता है तब उसे पता लगता है कि उसके अलावा एक और उम्मीदवार है। इसलिए वह परेशान होकर अपने पिता को दूसरे उम्मीदवार की खबर देता है। अपने बेटे सूर्या की जीत के लिए अनमोल दूसरे उम्मीदवार से मिलने जाता है। अपने बच्चे की प्रगति ही उसके जीवन का ध्येय है। तब वह जानता है कि यह भी उसी का बेटा है जिसकी माँ अनाया है जो उसकी प्रेमिका थी। अनमोल सूर्या की सचाई बिना बताए वहाँ से लौट जाता है। आखिरकार जीत सूर्या की होती है क्योंकि दूसरा उम्मीदवार सूर्या की सचाई कि वह एक ट्रांसजेन्डर है जानकर इंटरव्यू में भाग लिए बिना वहाँ से चला जाता है। लेकिन उसके विपरीत अनमोल के पिता अपने बेटे हर्षा को समाज के सामने परिचित कराना तक पसंद नहीं करते। वे हमेशा उसकी पहचान छिपाते रहते हैं। उन्होंने कभी भी अपने बेटे का साथ नहीं दिया और उसे समझने की कोशिश भी नहीं की।

अनमोल की नई सोच, बदले नज़रिए ने उसके बेटे सूर्या को समाज में मान -सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाई है। जहाँ अनमोल के पिता असफल होते हैं, वहीं अनमोल सफल होकर समाज को एक नई दिशा प्रदान करता है। एक नई सोच पनपने लगती है कि ट्रांसजेन्डर भी इंसान हैं, वे भी समाज का अहम हिस्सा बन सकते हैं। देश की प्रगति में भी उनकी अहम भूमिका हो सकती है। अपना जीवन कुर्बान करके भी हर्षा जैसे ट्रांसजेन्डर अपने पिता की गरिमा, अपने परिवार का नाम रौशन करने से पीछे नहीं हटते। मरकर भी अमरता को प्राप्त करते हैं। समाज में अपनी पहचान स्थापित करते हैं।

समाज से अलग हटकर सोचने के कारण अनमोल एक आदर्श पिता साबित होता है। वह अपने बेटे सूर्या को उच्च तालीम देता है और उसके डिटेक्टिव बनने के उसके मंसूबे को पूरा करता है। नई सोच का आगाज़ कराता यह उपन्यास समाज को एक नया संदेश प्रदान करता है कि आधे-अधूरे होने पर भी ट्रांसजेन्डर भी समाज का एक अहम हिस्सा है, उन्हें अपनाते हुए हमें समाज में आगे बढ़ना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ विनय कुमार पाठक -किन्नर विमर्श दशा और दिशा -पृ: 99
2. जिंदगी 50-50 - भगवंत अनमोल- पृ: 58
3. वही -- वही- पृ:59
4. वही -वही- पृ: 81
5. वही -- वही - पृ:79
6. वही - वही - पृ: 161
7. वही -- वही- पृ: 206
8. वही -- वही - पृ:134